• बाल कविता...

दीप जलाओ...

दीप जलाओ
आज दिवाली रे
खुशी-खुशी सब हंसते आओ
आज दिवाली रे।
मैं तो लूंगा खील-खिलौने
तुम भी लेना भाई
नाचो गाओ खुशी मनाओ
आज दिवाली आई।
आज पटाखे खूब चलाओ
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।
नए-नए मैं कपड़े पहनूं
खाऊं खूब मिठाई
हाथ जोड़कर पूजा कर लूं
आज दिवाली आई।

-अज्ञात

• चुटकुले...

सोनू : जरूरी नहीं है कि पत्नी अपना गुस्सा लड़-झगड़कर ही निकाले। एक और तरीका है।
मोनू : क्या?
सोनू : वह मोटी कच्ची रोटी और सब्जी में बिना नमक डाले भी अपना गुस्सा निकाल सकती है।

पप्पू : पुलिस आ गई है, जुआ बंद करना पड़ेगा।
राजू : हां भागो।
पुलिसवाला : तुम लोग अपने आप पुलिस वैन में क्यों बैठ गए?
पप्पू : पिछली बार जब हम पकड़े गए थे तो सीट नहीं मिली थी। पूरे रास्ते खड़े होकर जाना पड़ा था।

कंजूस महिला : ऐसा साबुन दो, जो कम घिसे और नहाने के बाद चेहरे पर लाली ले लाए।
दुकानदार : पप्पू, मैडम को एक ईंट का टुकड़ा दे दो।

दोपहर में पत्नी : लो डिनर करो जी।
पति (गुस्से में) : बेवकूफ औरत... यह डिनर नहीं, लंच है।
पत्नी : बेवकूफ तुम हो, क्योंकि यह रात का बचा हुआ खाना है।

• आप जानते हैं...

दिवाली पर दीए...

आप सभी जानते ही हैं कि रोशनी और खुशियों का पर्व दीपावली है और इस त्यौहार की शुरुआत धनतेरस अर्थात कार्तिक मास की त्रयोदशी तिथि से हो जाती है। कहा जाता है अमावस्या तक यह त्यौहार मनाया जाता है। ऐसे में त्रयोदशी, चतुर्थी और अमावस्या, इन तीन दिनों तक लगातार दीप प्रज्जवलन करना चाहिए लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन दिनों दीपक क्यों जलाते हैं। जी हां, अगर नहीं तो आइए हम आपको बताते हैं इसके पीछे के कुछ कारण।

● दिवाली की रात दीपक जलाने के महत्व के विषय में यह बताया जाता है कि दिवाली के दिन भगवान श्री रामचन्द्र 14 साल के वनवास के बाद अयोध्या लौट कर आएं थे। अयोध्या के सभी निवासी श्रीरामचन्द्र के आने से अत्यंत प्रसन्न थे। तभी सभी अयोध्यावासियों ने राम जी के आने की खुशी में पूरे नगर में दीपक जलाएं थे। इसलिए तब से ही दिवाली की रात दीपक जलाने का विधान है।

● दीपावली के दिन सिर्फ महालक्ष्मी के लिए ही नहीं बल्कि पितरों के निमित्त भी दीप जलाए जाते हैं और दीपक के साथ आतिशबाजी, आकाशदीप, कंडील आदि जलाने की प्रथा के पीछे यह धारणा है कि दीपावली-अमावस्या से पितरों की रात आरंभ होती है और हमारे पितर कहीं मार्ग से भटक न जाएं, इसलिए उनके लिए प्रकाश की व्यवस्था इस रूप में की जाती है। आपको बता दें कि इस प्रथा का बंगाल में विशेष प्रचलन है और हर साल वह इसी मान्यता को मानते हुए दीपक जलाये जाते हैं।

● वैज्ञानिक कारण - कहते हैं दिवाली पर दिए जलाने से मच्छरों का प्रकोप दूर हो जाता है क्योंकि वैज्ञानिक मानते हैं कि सरसों के तेल के जलने से जो धुआं वातावरण में घुलता है उसकी खुशबू मच्छरों को अपनी ओर आकर्षित करती है जिससे उनका खात्मा हो जाता है।

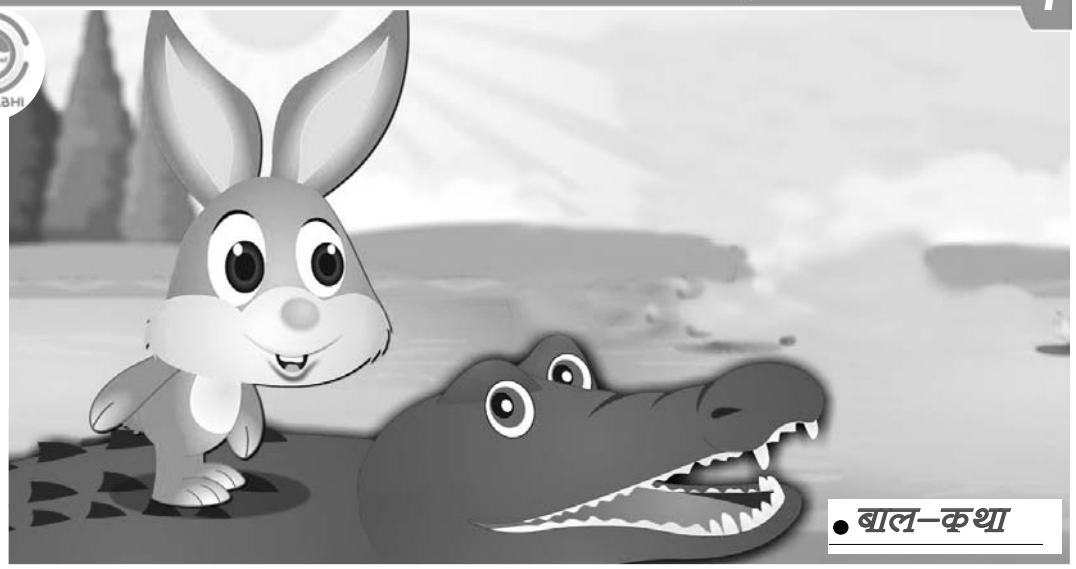

• बाल-कथा

गोरा खरगोश...

सागर के किनारे एक खरगोश रहता था। वह खरगोश सबसे सफेद था इसलिए सब उसे गोरा खरगोश कहते थे। उस खरगोश को दूसरे देशों को देखने की बहुत लगन थी।

एक दिन उस खरगोश ने एक चिड़िया से पूछा-चिड़िया रानी! तुम किस देश से आई हो? वहां तुमने क्या-क्या देखा?

चिड़िया बोली-मैं दूर केरल देश से आई हूं। वहां विभिन्न प्रकार की चीजें हैं। बहुत से आदमी हैं। वहां की राजकुमारी बहुत सुंदर है।

यह सुनकर खरगोश ने सोचा-एक-न-एक दिन मैं उस देश जरूर जाऊंगा।

सागर में रहने वाला एक मगरमच्छ खरगोश का मित्र था। खरगोश ने मगरमच्छ से केरल की राजकुमारी के बारे में पूछा।

मगरमच्छ बोला-हां, मैंने राजकुमारी को देखा है। वह परम सुंदरी है। शीघ्र ही उसका विवाह होने वाला है। खरगोश उत्सुकता से बोला-मगर भाई! जब तुम उस देश जाओगे तो मुझे भी अपने साथ ले चलना।

मगर ने कहा-ना बाबा ना, तुम्हारे माता-पिता नाराज होंगे। मैं नहीं ले जा सकता तुम्हें।

यह सुनकर खरगोश निराश हो गया। वह दूसरे देश जाने का उपाय सोचने लगा। अगले दिन गोरा खरगोश मगर के पास पहुंचा और बोला- क्या तुम जानते हो हमारा परिवार कितना बड़ा है? हमारे परिवार में कुल आठ सौ पचास खरगोश हैं। तुम्हारे परिवार में कितने मगरमच्छ हैं।

मगर बोला-मेरा परिवार भी बहुत बड़ा है, किंतु मैंने कभी गिना नहीं कि कितने मगमच्छ हैं।

गोरा खरगोश चालाकी से बोला--तुम अभी सारे मगरमच्छों को बुलाओ, मैं उन्हें गिनूंगा।

खरगोश की बात मानकर मगर पानी में गया। कुछ देर बाद सागर में चारों ओर मगरमच्छ ही मगरमच्छ दिखाई देने लगे। गोरा खरगोश बोला-ऐसे तो मैं गिन नहीं पाऊंगा। यदि ये पंक्ति बना लें तो गिनना आसान होगा।

सब मगरमच्छ एक पंक्ति में खड़े हो गए। खरगोश एक-एक मगरमच्छ पर कूदकर गिनने लगा--एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात... ।

इस तरह एक-एक मगरमच्छ को गिनते-गिनते वह सागर के दूसरी ओर पहुंच गया। बोला-मगर भाई! तुम्हारा परिवार भी बहुत बड़ा है।

लेकिन मैं अब केरल देश पहुंच गया हूं तो यहां घूमकर ही घर लौटूंगा। तुम मेरे माता-पिता को बता देना।

यह कहकर गोरा खरगोश उछलता-कूदता केरल देश की ओर बढ़ा। रास्ते में उसे चार राजकुमार मिले। वे उस देश की राजकुमारी से विवाह करना चाहते थे। गोरा खरगोश उनसे बोला-मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। मैं राजकुमारी को देखना चाहता हूं।

खरगोश की बात सुनकर चारों राजकुमार हंस पड़े। एक राजकुमार बोला--यदि राजकुमारी से मिलना चाहते हो तो पहले नदी में स्नान करके मिट्टी में लोटना पड़ेगा।

यह कहकर राजकुमार आगे बढ़ गए। खरगोश झट से नदी में नहाया और मिट्टी में लेटा। लेकिन ये क्या? अब तो वह बहुत काला और भद्दा लग रहा था। वह जोर-जोर से रोने लगा। तभी सबसे छोटा राजकुमार वहां से गुजरा। खरगोश ने उसे सारी बात बताई।

छोटा राजकुमार खरगोश को नदी पर ले गया। उसे अच्छी तरह नहलाया। अब गोरा खरगोश बहुत सुंदर दिखने लगा। फिर वे दोनों राजकुमारी से मिलने चल पड़े।

राजकुमारी बगीचे में बैठी थी। गोरा खरगोश राजकुमारी को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने अपने आने की और दयालु राजकुमार की सारी बातें राजकुमारी को बताई।

राजकुमारी ने छोटे राजकुमार को पसंद कर लिया। उनका विवाह बहुत धूमधाम से हुआ। गोरा खरगोश वहीं उनके पास रहने लगा।

-डॉ. मधु पंत, गीता गौतम

मगरमच्छ बोला-हां, मैंने राजकुमारी को देखा है। वह परम सुंदरी है। शीघ्र ही उसका विवाह होने वाला है। खरगोश उत्सुकता से बोला-मगर भाई! जब तुम उस देश जाओगे तो मुझे भी अपने साथ ले चलना।

मगर ने कहा-ना बाबा ना, तुम्हारे माता-पिता नाराज होंगे। मैं नहीं ले जा सकता तुम्हें। यह सुनकर खरगोश निराश हो गया। वह दूसरे देश जाने का उपाय सोचने लगा...

• जानकारी...

न चलाएं पटाखे...

पटाखों में जिन रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है वह बेहद खतरनाक है। कॉपर, कैडियम, लेड, मैग्नेशियम, सोडियम, जिंक, नाइट्रेट और नाइट्राइट जैसे रसायन का मिश्रण पटाखों को घातक बना देते हैं। इससे 125 डेसिबल से ज्यादा ध्वनि होती है। अचानक इन पटाखों से फटने से आदमी कुछ पल के लिए बहरा हो जाता है। कई बार पीड़ित स्थायी रूप से भी बहरा हो जाता है। पटाखों से निकली चिंगारी से हर साल सैंकड़ों लोगों की आंखें और चेहरे जख्मी हो जाते हैं। सांस की बीमारी तो होती ही है। ऐसे समय में दमे के रोगी की परेशानी बढ़ जाती है। डॉक्टरों के मुताबिक पटाखों से आम जन ही नहीं घरों और अस्पतालों में मरीजों और वृद्धों को भी काफी परेशानी होती है। पालतू पशु-पक्षियों की हालत और खराब होती है। मनुष्यों की श्वास नली में रुकावट, गुर्दे में खराबी और त्वचा संबंधी बीमारियां हो जाती हैं। इसके अलावा हाई ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक का भी खतरा रहता है। मानसिक अशांति और घबराहट के साथ उल्टी होना आम बात है। कई बार नर्वस सिस्टम भी गड़बड़ा जाता है।

• ग्रीन पटाखे..

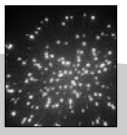

औद्योगिक अनुसंधान परिषद की संस्था नीरी ने ऐसे पटाखों की खोज की है जो पारंपरिक पटाखों जैसे ही होते हैं पर इनके जलने से कम प्रदूषण होता है। ग्रीन पटाखे मुख्य तौर पर तीन तरह के होते हैं। एक जलने के साथ पानी पैदा करते हैं जिससे सल्फर और नाइट्रोजन जैसी हानिकारक गैसें इन्हीं में घुल जाती हैं। दूसरी तरह के स्टार क्रैकर के नाम से जाने जाते हैं और ये सामान्य से कम सल्फर और नाइट्रोजन पैदा करते हैं। इनमें एल्युमिनियम का इस्तेमाल कम से कम किया जाता है। तीसरी तरह के अरोमा क्रैकर्स हैं जो कम प्रदूषण के साथ-साथ खुशबू भी पैदा करते हैं।